विचार बिन्दु

जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु। –ह्यूगो

पितृसत्ता के खिलाफ लड़ाई या चुनिंदा विरोध?

आजकल 'पितृसत्ता' शब्द खूब चर्चा में है। 'Smash the Patriarchy' का नारा लगाया जा रहा है और यह दावा किया जा रहा है कि भारतीय समाज में महिलाओं को सदियों से पुरुषों के अधीन रखा गया है। निस्संदेह, महिलाओं के साथ भेदभाव, हिंसा, असमान अवसर और उनकी स्वतंत्रता पर अनुचित प्रतिबंध किसी भी सभ्य समाज को स्वीकार नहीं होने चाहिए। लेकिन सवाल यह है कि क्या पितृसत्ता के खिलाफ हमारी लड़ाई सचमुच निष्पक्ष है, या इसकी तलवार चुनिंदा रूप से ही चलती है?

22 अगस्त को छात्रों की गूंज कार्यक्रम में बोलते हुए, राहुल गाँधी ने गांधी ने हमारे समाज में जेंडर असमानता की बात उठाई और कहा कि किसी महिला की पहचान सिर्फ़ बेटी, पत्नी या माँ होने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। इस तरह गाँधी ने अपने भाषण से पितृसत्ता पर बहस छेड़ दी थी, जब उन्होंने सवाल किया कि किसी महिला की पहचान पुरुषों के साथ उसके रिश्तों से क्यों तय होनी चाहिए। कांठोस नेता ने मनुस्मृति–एक प्राचीन ग्रंथ जो हिंदू समाज के लिए नियम तय करता है–की भी कड़ी आलोचना की और कहा कि इसकी बातें 'शर्मनाक' हैं। यह विचार सुनने में प्रगतिशील लगता है। आखिर कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो महिलाओं को समान अधिकार और सम्मान देने का विरोध करेगा? लेकिन जब इसी बहस में मनुस्मृति को निशाना बनाया जाता है, तब एक असहज प्रश्न उठना स्वाभाविक है–यदि धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं की स्थिति की समीक्षा हो रही है, तो क्या सभी धर्मों के ग्रंथों को एक ही कसौटी पर नहीं परखा जाना चाहिए?

मनुस्मृति की आलोचना करना किसी को गलत नहीं लगना चाहिए, यदि आलोचना तथ्य और संदर्भ के आधार पर हो। लेकिन किसी ग्रंथ के एक श्लोक को उसके ऐतिहासिक और भाषाई संदर्भ से काटकर प्रस्तुत करना भी न्यायसंगत नहीं है। मनुस्मृति के प्रसिद्ध श्लोक– ''**पिता रक्षित कौमारे, भर्ता रक्षित यौवने, पुत्रश्च स्थाविरे काले**''–को अक्सर इस अर्थ में प्रस्तुत किया जाता है कि महिला जीवनभर स्वतंत्र नहीं हो सकती। जबकि प्रस्तुत स्त्रोत में मेधातिथि सहित विभिन्न टीकाकारों की व्याख्याओं के आधार पर बताया गया है कि इसका आशय महिलाओं को हर क्षेत्र में स्वतंत्रता से वंचित करना नहीं, बल्कि उन्हें असुरक्षित न छोड़ने की जिम्मेदारी से भी जोड़ा गया है।

यह व्याख्या स्वीकार की जाए या न की जाए, लेकिन कम–से–कम इतना तो स्वीकार करना पड़ेगा कि किसी प्राचीन ग्रंथ की आलोचना उसके मूल संदर्भ और विभिन्न व्याख्याओं को सामने रखकर होनी चाहिए।

अब यही कसौटी अन्य धार्मिक ठांथों पर क्यों नहीं?

कुरान की कुछ आयतों की आधुनिक लैंगिक समानता के दृष्टिकोण से व्याख्या को लेकर लंबे समय से बहस होती रही है। सूरह अन–निसा 4:34 में पुरुष को परिवार का संरक्षक बताया गया है और कहा गया है पुरुषों को महिलाओं और उनके धन के उपयोग का अधिकार है, अच्छी महिलाएं वे हैं जो आज्ञाकारी होती हैं, और यदि कोई महिला अवज्ञा करती है तो उसका पति उसे चेतावनी दे सकता है, उसे त्याग सकता है और अंत में उसे पीट भी सकता है। सूरह अन–निसा 4:11 में पैतृक संपत्ति में महिला का हिस्सा पुरुष की तुलना में आधा निर्धारित किया गया है। इस तरह उत्तराधिकार के हिस्सों में भी पुरुष और महिला के बीच अंतर का उल्लेख मिलता है। सूरह अल–बकरा 2:282 के अनुसार वित्तीय लेन–देन और कानूनी मामलों में गवाही देते समय, दो महिलाओं की गवाही को एक पुरुष की गवाही के बराबर माना गया है।इसी प्रकार सूरह अन–निसा 4:3 में पुरुष के लिए एक से अधिक विवाह की अनुमति का प्रश्न भी आधुनिक लैंगिक समानता की कसौटी पर बहस का विषय है।

> **पितृसत्ता का वास्तविक अंत तब होगा जब महिला को किसी पुरुष की बेटी, पत्नी या माँ होने से आगे एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाएगा। लेकिन उसी के साथ पुरुष को भी केवल 'शोषक' मानने की मानसिकता समाप्त करनी होगी। भारत को प्रगति चाहिए-समाज का विघटन नहीं।**

इन आयतों की धार्मिक विद्वानों द्वारा अलग–अलग व्याख्याएँ की जाती हैं। इसलिए उनका उल्लेख किसी धर्म को बदनाम करने के लिए नहीं, बल्कि समान बौद्धिक कसौटी की मांग करने के लिएहै।

यही बात बाइबल पर भी लागू होती है। नए नियम के कुछ अंशों में महिलाओं के धार्मिक सभाओं में बोलने तथा पुरुष के अधीन रहने की चर्चा है। तीमुथियुस में कहा गया है स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता के साथ सीखना चाहिए। मैं किसी स्त्री को उपदेश देने या पुरुष पर अधिकार जताने की अनुमति नहीं देता; उसे शांत रहना चाहिए । कुरिन्थियों में यह लिखा है स्त्रियों को चर्चों में चुप रहना चाहिए। उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, बल्कि उन्हें अधीन रहना चाहिए... यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं, तो घर पर अपने पतियों से पूछें; क्योंकि स्त्री का चर्च में बोलना शर्मनाक है। बाइबल के कुछ अंशों को आधुनिक दृष्टि से महिलाओं की समानता के प्रश्न पर विवादास्पद माना जाता है। पुराने नियम में भी महिलाओं से संबंधित ऐसे नियम मिलते हैं जिनकी आज के मानवाधिकार और लैंगिक समानता के मानकों से आलोचना की जा सकती है।

तो फिर प्रश्न सीधा है–यदि मनुस्मृति का एक श्लोक आधुनिक समाज के सामने कटघरे में खड़ा किया जा सकता है, तो दूसरे धर्मग्रंथों के विवादास्पद अंशों पर प्रश्न उठाना सांप्रदायिकता क्यों बन जाता है?

समानता का अर्थ यही है कि कसौटी सबके लिए समान हो।

यहाँ एक और महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या 'पितृसत्ता समाप्त करो' का अर्थ परिवार व्यवस्था को भी समाप्त करना है? क्या पिता, पति और पुत्र द्वारा परिवार की महिला सदस्यों की सुरक्षा और जिम्मेदारी को भी पितृसत्ता कहा जाएगा? क्या भारतीय संयुक्त परिवार, जिसमें कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती रही हैं, केवल इसलिए पिछड़ा हुआ है क्योंकि उसमें पुरुष की भूमिका महत्वपूर्ण रही है?

परिवार में पुरुष की जिम्मेदारी को पुरुष वर्चस्व और महिला की सुरक्षा को महिला की स्वतंत्रता का विरोधी मान लेना भी एक प्रकार का अतिवाद है। समस्या तब पैदा होती है जब 'सुरक्षा' के नाम पर महिला के अधिकार छीन लिए जाएँ, उसकी शिक्षा रोक दी जाए, उसे नौकरी करने से रोका जाए या उसके जीवन के निर्णय उस पर थोपे जाएँ। ऐसी मानसिकता का विरोध होना ही चाहिए।

लेकिन इसका समाधान परिवार और परंपरा को नष्ट करना नहीं, बल्कि उन्हें समय के अनुरूप सुधारना है।

भारतीय संस्कृति में नारी को केवल कमजोर व्यक्ति के रूप में नहीं देखा गया। शक्ति, विद्या, समृद्धि और ज्ञान के प्रतीक रूप में देवी की कल्पना भारतीय परंपरा में अत्यंत प्राचीन है। इसलिए भारतीय समाज की तमाम कमियों के बावजूद उसे केवल 'महिला विरोधी पितृसत्तात्मक व्यवस्था' कह देना भी इतिहास के साथ न्याय नहीं होगा।

आज आवश्यकता 'पुरुष बनाम महिला' की लड़ाई खड़ी करने की नहीं है। आवश्यकता ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनाने की है जिसमें महिला को न संरक्षण के नाम पर कैद किया जाए और न स्वतंत्रता के नाम पर परिवार से काट दिया जाए।

राहुल गांधी जैसे प्रभावशाली नेताओं से अपेक्षा और अधिक बड़ी है। यदि वे पितृसत्ता के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं तो यह स्वागतयोग्य है, लेकिन फिर उन्हें हर धार्मिक और सामाजिक परंपरा को समान कसौटी पर परखने का साहस भी दिखाना चाहिए। केवल मनुस्मृति पर प्रहार और अन्य धर्मग्रंथों पर मौन–यह समानता की लड़ाई नहीं, बल्किचुनिंदा वैचारिक सुविधा दिखाई दे सकती है।

पितृसत्ता का वास्तविक अंत तब होगा जब महिला को किसी पुरुष की बेटी, पत्नी या माँ होने से आगे एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाएगा। लेकिन उसी के साथ पुरुष को भी केवल 'शोषक' मानने की मानसिकता समाप्त करनी होगी।

नारा 'Smash the Patriarchy' हो सकता है, लेकिन उससे पहले यह तय करना होगा कि हम किस पितृसत्ता को तोड़ना चाहते हैं–अन्याय और भेदभाव वाली पितृसत्ता को या परिवार, जिम्मेदारी और सामाजिक संबंधों की पूरी व्यवस्था को?

पहली वाली को तोड़ना प्रगति है; दूसरी को तोड़ना समाज को तोड़ना होगा।

और भारत को प्रगति चाहिए–समाज का विघटन नहीं।

–अतिथि सम्पादक,
प्रोफेसर (डा.) पी. सी. कंठालिया,
पूर्व विभागाध्यक्ष (मृदा विज्ञान) एवं मुख्य वैज्ञानिक,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

हमें तो अपनों ने लूटा, अंग्रेजों में कहां दम था!

रोटेरियन सुनील दत्त गोयल

भारत का इतिहास पढ़ते हुए हमें बार–बार बताया गया कि अंग्रेज आए, उन्होंने भारत को लूटा, हमारी संपत्ति विदेश ले गए, व्यापार पर कब्जा किया और हमें गरीबी तथा पिछड़ेपन की ओर धकेल दिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि औपनिवेशिक शासन का मूल उद्देश्य भारत के हित में शासन करना नहीं, बल्कि अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों को मजबूत करना था। अंग्रेजों ने भारत का शोषण किया, यह इतिहास का हिस्सा है। लेकिन आजादी के करीब आठ दशक बाद एक असहज सवाल पूछना जरूरी है। क्या आज भी भारत की हर समस्या के लिए अंग्रेजों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? क्या हमारी वर्तमान कमजोरियों के लिए भी वही जिम्मेदार हैं? या फिर अब हमें आईना अपने सामने रखना चाहिए?

अंग्रेज भारत में आए तो व्यापार के लिए थे। धीरे–धीरे उन्होंने यहां की राजनीतिक परिस्थितियों, आपसी मतभेदों और स्थानीय सत्ता संघर्षों का फायदा उठाया। जहां उन्हें किसी राजा की दूसरे राजा से दुश्मनी मिली, वहां उन्होंने उसका इस्तेमाल किया। जहां लालच काम आया, वहां लालच दिया। जहां राजनीतिक महत्वाकांक्षा काम आई, वहां उसे हवा दी। आखिरकार व्यापार करने वाली कंपनी सत्ता की सबसे बड़ी ताकत बन गई। इसलिए सवाल यह भी है कि अंग्रेज सफल कैसे हुए? केवल इसलिए कि वे बहुत शक्तिशाली थे? या इसलिए भी कि हम बंटे हुए थे और हमारे ही बीच ऐसे लोग थे जिन्होंने अपने तत्काल स्वार्थ के लिए उनका साथ दिया?

यही सवाल आज भी हमारे सामने खड़ा है। पिछले 70 वर्षों में गांव से लेकर जिला स्तर तक स्थानीय विभागों में भ्रष्टाचार ने जड़ें जमा ली हैं। अतिक्रमण, अवैध निर्माण, भू–माफिया, कब्जे और अवैध कारोबार बिना स्थानीय तंत्र की मिलीभगत के चल पाना मुश्किल है। सवाल यह है कि जिस देश को हम भारत माता कहते हैं, उसी के साथ धोखा करने में हमें शर्म क्यों नहीं आती? अंग्रेजों ने भारत को अपनी मां नहीं कहा, फिर भी उनके दौर की रेलवे, डाक व्यवस्था, हावड़ा ब्रिज और राजस्थान में सांभर नमक की झील जैसी कई पुरानी संरचनाएं आज भी खड़ी हैं। मैं अंग्रेजों की तारीफ नहीं कर रहा, लेकिन सवाल हमारी नीयत और व्यवस्था का है। सरकार की भ्रष्टाचार विरोधी संस्थाएं भी जब कार्रवाई के लिए सरकार की अनुमति की मोहताज हों और मामले दशकों तक लंबित पड़े रहें, तो भ्रष्टाचारी बेखौफ क्यों नहीं होगा? अंग्रेजों ने भारत को लूटा था, लेकिन आज हम अपने ही हाथों हमारी भारत माता को लूट रहे हैं।

सरकारी कर्मचारियों और तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार की कीमत सिर्फ पैसे से नहीं चुकानी पड़ती। इसकी वजह से हर साल न जाने कितने लोगों की बेवजह जान चली जाती है, कितने परिवार बर्बाद हो जाते हैं। घटिया निर्माण से गिरती इमारतें हों, भ्रष्टाचार से कमजोर किए गए पुल हों या नियमों की अनदेखी, हर बार भ्रष्टाचार का असली शिकार आम आदमी ही बनता है। भ्रष्टाचार सिर्फ देश की अर्थव्यवस्था नहीं लूटता, कई बार किसी की जिंदगी और पूरे परिवार का भविष्य भी लूट लेता है।

तो सवाल यह नहीं होना चाहिए कि अंग्रेजों ने क्या बनाया। सवाल यह होना चाहिए कि आजाद भारत ने पिछले इतने दशकों में क्या बनाया और उसकी गुणवत्ता कितनी टिकाऊ है? हम भारत को भारत माता कहते हैं। यह हमारे लिए केवल एक शब्द नहीं, एक भाव है। लेकिन अगर भारत हमारी माता है तो फिर उसके साथ भ्रष्टाचार करना क्या उसके साथ अत्याचार नहीं है? सरकारी काम में रिश्वत, घटिया निर्माण, फर्जी दस्तावेज, नियमों को पैसे के दम पर बदलवाना, कर चोरी, दलाली और व्यक्तिगत लाभ के लिए व्यवस्था का इस्तेमाल आखिर किस विदेशी ने आकर किया? हमारे बीच के ही लोगों ने किया।

हम बाहरी दुश्मनों की बात करते हैं। पाकिस्तान और चीन से खतरे की बात करते हैं। यह खतरे वास्तविक हैं और देश की सुरक्षा के लिए गंभीर हैं। लेकिन राष्ट्र केवल सीमा पर खड़े सैनिकों से मजबूत नहीं होता। राष्ट्र भीतर से भी मजबूत होना चाहिए। आज सबसे बड़ी चिंता यह है कि ईमानदार आदमी के लिए व्यवस्था में टिकना कई बार मुश्किल दिखाई देता है। जिसके पास पैसा, पहुंच या राजनीतिक ताकत है, उसकी आवाज जल्दी सुनाई देती है। आम आदमी की शिकायत कई बार एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर और एक अदालत से दूसरी अदालत तक घूमती रहती है। फिर हम कहते हैं कि अंग्रेजों ने हमें न्याय नहीं दिया।

आजाद भारत में न्याय की व्यवस्था हमारी अपनी है। संविधान हमारा है। संसद हमारी है। अदालतें हमारी हैं। प्रशासन हमारा है। फिर सवाल भी हमारा ही होना चाहिए कि इन संस्थाओं को हमने कितना मजबूत बनाया? इसी तरह लोकतंत्र में विरोध करना अधिकार है। सरकार की आलोचना करना भी अधिकार है। किसी नीति से असहमति होना भी लोकतंत्र का हिस्सा है। लेकिन विरोध और राष्ट्रविरोध के बीच की रेखा भी समझनी होगी। विदेशी धन, लॉबिंग या किसी भी बाहरी प्रभाव के संदर्भ में भी पारदर्शिता और जवाबदेही जरूरी है। किसी व्यक्ति या संगठन को केवल असहमति के कारण राष्ट्रविरोधी कहना गलत है, लेकिन राष्ट्रहित के नाम पर हर तरह की गतिविधि को सवालों से बाहर रखना भी उतना ही गलत है।

सोशल मीडिया ने इस समस्या को और जटिल बना दिया है। आज सूचना कुछ सेकंड में करोड़ों लोगों तक पहुंच जाती है। उसके साथ दुष्प्रचार भी पहुंचता है। लेकिन यहां भी विदेशी ताकतों को दोष देने से पहले हमें अपने व्यवहार को देखना होगा। कोई झूठ फैलाता है तो उसे आगे बढ़ाने वाला भी हमारा ही व्यक्ति होता है। और यही हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। हम जाति के नाम पर बंटे हैं। धर्म के नाम पर बंटे हैं। क्षेत्र के नाम पर बंटे हैं। भाषा के नाम पर बंटे हैं। राजनीतिक दलों के नाम पर बंटे हैं। फिर कहते हैं कि अंग्रेजों ने हमें बांट दिया। अंग्रेजों ने अगर कभी हमारी कमजोरियों का फायदा उठाया था तो इसका मतलब यह नहीं कि आज भी हम उन्हीं कमजोरियों को अपने हाथों से जिंदा रखें।

आजादी का अर्थ केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं है। असली आजादी तब होगी जब हमारा प्रशासन ईमानदार होगा, न्याय समय पर मिलेगा, निर्माण टिकाऊ होगा, भ्रष्टाचारियों को कठोर दंड सुनिश्चित हो और देश की आर्थिक तथा तकनीकी जरूरतों के लिए हमेशा दूसरों पर निर्भर नहीं रहेंगे। आज दुनिया की बड़ी तकनीकी सेवाओं में हमारी निर्भरता विदेशी कंपनियों पर है। सोशल मीडिया, ईमेल, संदेश भेजने वाले मंच, वीडियो और कई दूसरी डिजिटल सेवाएं विदेशी कंपनियों के हाथ में हैं। सवाल यह है कि क्या भारत अपनी जरूरत के विश्वस्तरीय डिजिटल मंच नहीं बना सकता? चीन ने अपने लिए अलग डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र खड़ा किया है। भारत के पास प्रतिभा, पूंजी, बाजार और तकनीकी क्षमता है। फिर हम केवल उपभोक्ता क्यों बनें?

मोबाइल फोन के निर्माण और निर्यात में भारत की प्रगति निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि हम वास्तव में कितना निर्माण कर रहे हैं और कितना केवल अलग–अलग कल–पुर्जे जोड़कर तैयार उत्पाद बना रहे हैं। असेंबली से आगे बढ़कर डिजाइन, तकनीक, चिप, सॉफ्टवेयर और मूल अनुसंधान में आत्मनिर्भर होना ही वास्तविक औद्योगिक शक्ति होगी।

हमारे सबसे प्रतिभाशाली लोग विदेश क्यों जाते हैं, इस पर भी गंभीर चर्चा होनी चाहिए। शिक्षा, अवसर, शोध, रोजगार और सामाजिक नीतियों से जुड़े हर पहलू पर खुले मन से विचार करना होगा। किसी एक नीति को पूरे प्रतिभा पलायन का कारण बताना आसान है, लेकिन समस्या उससे कहीं बड़ी है। इसलिए आज जरूरत अंग्रेजों को गाली देने की नहीं, खुद से सवाल पूछने की है। अंग्रेजों ने भारत को लूटा, इसमें इतिहास अपना फैसला दे चुका है। लेकिन आज भारत को कौन लूट रहा है, यह सवाल हमें खुद से पूछना होगा।

जो रिश्वत ले रहा है, जो घटिया निर्माण कर रहा है, जो कर चोरी कर रहा है, जो फर्जी कागज बना रहा है, जो अपने पद का दुरुपयोग कर रहा है, जो देशहित से ऊपर अपना स्वार्थ रख रहा है, वह चाहे किसी भी जाति, धर्म, दल या विचारधारा का हो, वह देश को भीतर से कमजोर कर रहा है।

राष्ट्र निर्माण सरकार अकेले नहीं कर सकती। नागरिक भी उतने ही जिम्मेदार हैं। किसी भी देश को बाहर का दुश्मन तभी कमजोर कर सकता है जब भीतर से दरवाजे खुले हों। इसलिए इतिहास से हमें केवल यह नहीं सीखना चाहिए कि अंग्रेजों ने हमें कैसे हराया। हमें यह भी सीखना चाहिए कि हमने उन्हें सफल होने का अवसर कैसे दिया। आज सवाल अंग्रेजों का नहीं, हमारा है। और शायद इसी कड़वी सच्चाई को एक पंक्ति में कहा जा सकता है–हमें तो अपनों ने लूटा, अंग्रेजों में कहाँ दम था।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री

जिस नौकरी के लिए तैयारी कर रहे हैं, वो ग्रेजुएशन तक बदल भी सकती है

शिवनंदन कुमावत

एआई ने जॉब मार्केट को बदल कर रख दिया है। कम्प्यूटर प्रोग्रामर, वेब डवलपर्स, अनुवादक, कस्टमर केयर प्रतिनिधि जैसे जॉब तेजी से कम हो रहे हैं और वेतन कम होता जा रहा है, दूसरी ओर भाषा विशेषज्ञ (सही मायने में विशेषज्ञ) गणित और दर्शनशास्त्र से जुड़े क्षेत्रों में भारी भरकम पैकेज मिल रहा है और योग्य लोग नहीं मिल पा रहे लेकिन यह हमारे विमर्श का मूल विषय नहीं है। मूल विषय है कि जयपुर के किसी स्कूल में 11वीं का एक बच्चा स्ट्रीम चुनने वाला फॉर्म भर रहा है – साइंस, साथ में कंप्यूटर साइंस। पूछो क्यों, तो जवाब आत्मविश्वास से आता है: सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना है। अब पूछो कि सॉफ्टवेयर इंजीनियर असल में करता क्या है, या जब यह बच्चा ग्रेजुएट होगा तब यह काम कैसा दिखेगा – तो जवाब उतना पक्का नहीं रहता। ज़्यादातर सब्जेक्ट सिर्फ इसलिए चुना जाता है क्योंकि वो आज सेफ और पॉपुलर लगता है। यह सीन जयपुर और राजस्थान के हज़ारों घरों में हर साल दोहराया जाता है। कोर्स अक्सर उसकी आज की छवि देखकर चुना जाता है – यह सवाल पूछे बिना कि जब बच्चा असल में इस फील्ड में उतरेगा, तब यह फील्ड कैसी होगी।

असली समस्या–राजस्थान में ज़्यादातर कॅरियर फैसले आज भी एक पुरानी सोच पर टिके हैं – इंजीनियरिंग स्टेबल, मेडिकल इज़्ज़तदार, सरकारी नौकरी सिक्योर। यह सोच गलत नहीं, पर इन रास्तों के पीछे की जॉब मार्केट अब वैसी नहीं रही। यहां एक स्थानीय आवाज़ जोड़ें, जयपुर के किसी अभिभावक, 12वीं के छात्र या स्कूल काउंसलर का 2–3 पंक्ति का कोट, जो इस दुविधा को असल ज़िंदगी से जोड़े। राजस्थान ने कॉम्पिटिटिव एग्ज़ाम की तैयारी के लिए मज़बूत सिस्टम बनाया है। कोटा देश भर में जाना जाता है और जयपुर खुद को कोटा शिफ्ट हुए बिना कोचिंग के तौर पर पेश करता है पर एग्ज़ाम की तैयारी और कॅरियर एक्सप्लोरेशन एक चीज़ नहीं है। कोई कोचिंग सेंटर बच्चे को NEET या JEE के लिए तैयार कर सकता है पर यह नहीं बता सकता कि यह एग्ज़ाम उस बच्चे के लिए सही मंज़िल है या नहीं। 2025 में अकेले राजस्थान से करीब 3.33 लाख छात्रों ने NEET परीक्षा दी जबकि राज्य में कुल मिलाकर करीब 7,330 MBBS सीटें ही उपलब्ध हैं यानी हर सीट के लिए करीब 45 दावेदार।

असली तस्वीर इससे भी ज़्यादा चिंताजनक है। इन 7,330 सीटों में से सिर्फ करीब 4,630 सीटें ही सरकारी मेडिकल कॉलेजों में हैं, जहां फीस आम परिवार की पहुंच में होती है। निजी कॉलेजों में सालाना फीस 25 से 35 लाख रुपये तक जाती है। यानी हर सरकारी सीट के लिए करीब 72 छात्र मुकाबले में हैं और ज़्यादातर मध्यमवर्गीय परिवारों के पास असल में सिर्फ एक ही किफ़ायती रास्ता बचता है। यह आंकड़ा मांग दिखाता है पर यह नहीं बताता कि इनमें से कितने बच्चों ने यह रास्ता सोच–समझकर चुना और कितनों ने सिर्फ इसलिए क्योंकि सफलता की सबसे जानी–पहचानी परिभाषा यही थी। इसका मतलब यह नहीं कि इंजीनियरिंग, मेडिकल, कॉमर्स या सरकारी नौकरी गलत रास्ते हैं। सही बच्चे के लिए ये आज भी भरोसेमंद रास्ते हैं। सवाल यह है कि बच्चा इस फैसले तक पहुंचा कैसे। जो फैसला बच्चे की दिलचस्पी, काबिलियत और काम करने के तरीके को असल में समझकर लिया जाता है, वो हमेशा ज़्यादा मज़बूत होता है माता–पिता और बच्चे आज से ही एक छोटा बदलाव कर सकते हैं – तुम बड़े होकर क्या बनोगे? की जगह पूछें, तुम्हें किस तरह की समस्याएं सुलझाना पसंद है, और किस तरह का काम का माहौल सूट करेगा? दूसरा सवाल बातचीत खोलता है, पहला सिर्फ एक लेबल मांगता है। कॅरियर गाइडेंस का मकसद कभी यह नहीं था कि बच्चा जल्द से जल्द कोई भी कॅरियर चुन ले। मकसद है कि बच्चा खुद को समझे, अपने ऑप्शन्स को समझे, और इन दोनों के बीच का रास्ता समझे क्योंकि जिस दुनिया में यह बच्चा आगे कदम रखेगा, वो आज जैसी नहीं होगी। सबसे काम की गाइडेंस भविष्य बताने का दावा नहीं करती। वो बच्चे को इस लायक बनाती है कि भविष्य जैसा भी आए, वो उसके लिए तैयार रहे।

–शिवनंदन कुमावत,
कॅरियर गाइडेंस एक्सपर्ट हैं।

आओ ''डिग्री-डिग्री'' खेलें!

रामनिवास बैरवा

ज्ञान की परिचायक डिग्री राजनीतिक मान–अपमान का हथियार बना दी गई है। यह एक नया राजनीतिक शोध है जिस पर कई लोगों को पी.एच.डी की डिग्री दी जा सकती है, लेकिन बिना डिग्री के करोड़ों को अपना अनुगामी बनाया जा चुका है चाहे वह प्रवचनों का पांडाल हो या कानूनों की खेती–बाड़ी करने वाली डोम। सिद्धांतहीन, दिशाहीन लोगों के लिए डिग्री ही एक हथियार बचती है जिसके आधार पर वे अपना विरोध जताते हैं और जनता के विचारों से जुडे. बिना डिग्री के नेताओं को कमतर तथा अज्ञानी साबित करने की कोशिश करते हैं, सिर्फ अपने डिग्री–ज्ञान के आधार पर। यह कथित लोकतंत्र में सुधार के बहाने से किया जा रहा है।

राजनीति में 'डिग्री' का प्रश्न नया हो सकता है, लेकिन डिग्री का अभाव ऐतिहासिक है, जहां योग्यता–अयोग्यता की परख केवल डिग्री से ही सम्भव हुआ हो। अभी कुलपति बनाये जाने वालों की डिग्री का प्रश्न नहीं है बल्कि कुलपति बनाने वालों की डिग्री का उठ रहा है। अच्छा है। गाली–गुप्ते व्यक्तिगत चरित्रहीन के बदले डिग्री का सवाल उठाना एक संभ्रान्त, कुलीन तर्क–वितर्क जैसा लगता है। तब ही तो स्मृति ईरानी को शिक्षामंत्री बनाये जाने पर शिक्षाविदों ने इतना हल्ला मचाया कि बाद के शिक्षा मंत्रियों ने परीक्षाओं के पेपर लीक करवा के डिग्रियां लेने के रास्ते ही बंद कर दिये। अब डिग्रियां लेने के लिए हाथ पर मारिए। अमरीका–रिटर्न, राजनीति के उदीयमान सितारे अभिजीत दीपके की डिग्री पर भी सवाल उठा दिये गये है। ...... भ्रष्टाचार निरोधक सरकार के अनुगामियों को उसमें भ्रष्टाचार की बू आने लगी है।

मैनें भी कभी वैज्ञानिक बनने, कोई कुलपति बनने या कुलपति बनाने वाले नौकरशाहों के सिर–मौर आई.ए.एस. बनने की सोची थी; परन्तु बिना बिजली, बिना पानी वाले गांव में ककहरा पढ़ सका, यही बहुत बड़ी उपलब्धि थी, यह भी तब, जब आज बिजली–पानी वाले वे ही स्कूल उस समय बने नये भवन के नवीकृत रूप गाय–भैसों के बाड़े में लग रही है। तो साहब डिग्री प्राप्त करने का संघर्ष कोई भी विद्यार्थी कैसे छोड़ सकता है। लिहाजा, दंसवी के बाद सीधी बी.ए. की डिग्री दिलाने वाले तत्कालीन निजी कॉलेजों से सम्पर्क किया तो पता चला कि फर्जी डिग्रियां कैसे दी जाती है, कैसे ली जाती है।

यह फर्जी डिग्रियां लेने देने का काम आज भी बकायदा चल रहा हैं। हो सकता है फर्जी डिग्रियां लेकर बने शोध (जांच) कर्त्ताओं को यह सहज ज्ञान पहले से ही पता था। पता हो भी क्यों नहीं, डिग्रियों का सदा प्रवाहित रहने वाली पवित्र गंगा की गंगोत्री से लेकर सुन्दरबन तक किस–किस को डिग्रियां मिली है, गंगा में गंदगी कहां कहां और किस–किस मात्रा में मिलायी जा रही है, उन्हें पता है।

1991 के बाद, वैश्वीकरण के दौर में भारत ने भी अपनी उपस्थिति का अहसास करवाने के लिए शिक्षा में अमूल–चूल परिवर्तन का बीड़ा उठाया और रायपुर शहर जैसे शहर के एक ही मोहल्ले में 25–30 विश्वविद्यालय खोल दिये गये थे। इन विश्वविद्यालयी मसरूमों की खेती के सम्भावित प्रदूषण से दुखी होकर प्रोफेसर यशपाल ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका लगाई थी। सुप्रीम कोर्ट ने इस तरह से विश्वविद्यालय खोलने को गलत माना और संविधान के निर्देशानुसार ''विश्व विद्यालय अनुदान आयोग'' के द्वारा तय मानकों के अनुसार विश्व विद्यालय स्थापित करके पाठ्यक्रम तय करने और डिग्रियां देने की अनुपालना करने का फैसला दिया।

वैसे भी राजनीति में डिग्रियों का कोई मतलब नहीं होता, कोई महत्व नहीं होता। राजनीति में महत्व होता है तो चिन्तन का। डिग्री धारक एक बेहतर अनुगामी हो सकते हैं, एक बेहतर आज्ञापालक हो सकते हैं, लेकिन वे एक बेहतर विचारक नहीं हो सकते। क्योंकि उनकी शिक्षा–दीक्षा उसी ताने–बाने के वस्त्राभूषणों से सज्जित होती है जो विचारक होने सेबदले बेहतर आज्ञापालक बनते हैं। भारत के आई.ए.एस, आई.पी.एस. इसके नमूने हैं? मैकाले को भला बुरा कहने वाले उसे भला बुरा कहते रहें, लेकिन, उसने सरकारी अफसरों–बाबुओं के लिए विचारक बनने का रास्ता छोड़ा ही नहीं। यही कारण है कि महाभारत के आख्यानों–व्याख्यानों को आधार बनाकर लिखी गई भारतीय अपराध संहिता आज भी वर्षों से वही है, सिर्फ नाम बदला है, सिर्फ धाराओं का क्रम और क्रम संख्याएं बदली है। नई संहिता लिखने के लिए विचार–विवेक आवश्यक है, उसके बिना वे नया नही कर पायेंगे। नये के नाम पर, मनुस्मृति के उदाहरणों से समान न्यायिक संहिता बनाने का दिशा–निर्देश वे ही बिना डिग्री वाले डिग्री वाले को दे रहे हैं। उनमें इतना भी विवेकए इतजी भी हिम्मत नहीं है कि उनके सामने मौजूद संविधान के बाध्यताओं के अनुसार काम करें और धृष्ट, बिना डिग्री वाले अपने पथ–प्रदर्शकों को संविधान का संदेश बढ़ायें और भारत की जनता के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को अपने उत्तरदायित्वों के प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपने विवेक को परिचय दें। वरना, मैकाले के होनहार शिष्य तो वे हैं ही।

–राम निवास बैरवा,
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, स्वतंत्र लेखक एवं विचारक।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 17 सितम्बर, 2026

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत–2083, अनुराधा नक्षत्र रात 7:54 तक, विष्कुम्भ योग दिन 12:50 तक, तैतिल करण दिन 10:48 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–मिथुन, बुध–कन्या, गुरू–कर्क, शुक्र–तुला, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि और रवियोग रात 7:54 तक है। आज अश्विनी संक्रांति, सूर्य कन्या राशि में प्रवेश प्रातः 7:53 पर करेगा। पूण्य काल दिन 2:17 तक है। आज सूर्य षष्ठि व्रत, कार्तिक स्वामी दर्शन, सोमनाथ व्रत, विश्वकर्मा पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया– शुभ सूर्योदय से 7:48 तक, चर 10:50 से 12:21 तक, लाभ–अमृत 12:21 से 3:54 तक, शुभ 4:55 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल– 1:30 से 3:00 तक, सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:26

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं एवं उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच–विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

सिंह
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से भागदौड़ रहेगी और समय खराब होगा। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
मानसिक तनाव दूर होगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल–आत्मविश्वास ऊंचा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
धार्मिक–मांगलिक कार्य के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। शुभ–मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

धनु
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।